Printed Pages : 7 Roll No.....

BT/Sem VI/178

B.A. (Hons.) (Semester VI) Examination, 2014-15

Hindi

Core Course

Paper : BAH-321

Katha Sahitya

Time : Three Hours ***Full Marks : 70***

(Write your Roll No. at the top immediately on the receipt of this question paper)

खण्ड–क

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर सविस्तार दें। 10×4=40

(क) क्या अपने समय और समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने की दृष्टि से 'मैला आँचल' को एक सफल उपन्यास कहा जा सकता है ? इस सन्दर्भ में आप अपना पक्ष प्रस्तुत कीजिए।

(ख) प्रेमचन्द्र के उपन्यास 'रंगभूमि' का नायक सूरदास गाँधी वादी प्रभाव से आक्रान्त है, इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? लिखिए।

P.T.O.

(ग) ''आधा गाँव'' स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं देश विभाजन की त्रासदी का महाआख्यान है।'' इस कथन की तार्किक व्याख्या कीजिए।

(घ) 'नयी कहानी में विवाह पूर्व सफल-असफल प्रेम का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है' उक्त कथन के आलोक में 'यही सच है' कहानी की विशेषताओं को समझाइए।

(ड़) मनोविज्ञानिकता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'पूस की रात' कहानी की समीक्षा कीजिए।

(च) संवेदना एवं शिल्प की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी का मूल्यांकन कीजिए ।

(छ) 'काला रजिस्टर' कहानी का शिल्पगत वैशिष्ट्य उद्घाटित कीजिए।

(ज) कहानी कला की दृष्टि से स्वयं प्रकाश की कहानी 'पार्टीशन' की समीक्षा कीजिए।

2. निम्नलिखित गद्यांशों से किन्हीं **चार** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। 5×4=20

(क) लज्जा अत्यन्त निर्लज्ज होती है । अन्तिम काल में भी जब हम समझते हैं कि उसकी उलटी साँसे चल रही है वह सहसा चैतन्य हो जाती है, और पहले से भी अधिक कर्तव्यशील हो जाती है। हम दुरावस्था में

(झ) 'बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुँह में गई' किस उपन्यास की पंक्ति है ?

(ञ) 'नयी कहानी त्रयी' के कहानीकारों के नाम क्या है ?

3. निम्नलिखित **सभी** प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर लिखें।

1×10=10

(क) मैला आँचल उपन्यास का प्रथम प्रकाशन वर्ष लिखिए।

(ख) 'जवान बेटा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून-भी सूख जाए' किस उपन्यास की पंक्ति है ?

(ग) 'उसने कहा था' कहानी का प्रथम प्रकाशन कब और किस पत्रिका में हुआ था ?

(घ) 'इरा' किस कहानी का पात्र है ?

(ङ) नयी कहानी का आरम्भ कब से माना जाता है?

(च) भारत-पाकिस्तान विभाजन त्रासदी पर आधारित किन्हीं **दो** हिन्दी उपन्यासों के नाम लिखिए।

(छ) 'सुभागी' किस उपन्यास की पात्र है ?

(ज) सिल्धेश्वरी किस कहानी का पात्र है ?

पड़कर किसी मित्र से सहायता की याचना करने को घर से निकलते हैं लेकिन मित्र से आँखे चार होते ही लज्जा हमारे सामने आकर खड़ी हो जाती है और हम इधर-उधर की बातें करके लौट आते हैं। यहाँ तक कि हम एक शब्द भी ऐसा मुँह से नहीं निकलने देते, जिसका भाव हमारी अन्तर्वेदना का द्योतक हो।

(ख) धर्मभीरुता में जहाँ अनेक गुण है वहाँ एक अवगुण भी है, वह सरल होती है। पखंड़ियों का दॉव उस पर सहज ही में चल जाता है। धर्मभीरु प्राणी तार्किक नहीं होता। उसकी विवेचना शक्ति शिथिल हो जाती है। ताहिरअली ने जब से अपनी दोनों विषमताओं की बातें सुनी थी। उनके हृदय में घोर अशान्ति हो रही थी। बार-बार खुदा से दुआ माँगते थे, नीति ग्रन्थों से अपनी शंका का समाधान करने की चेष्टा करते थे।

(ग) विवाह से मुझे अपनी धार्मिक स्वाधीनता त्याग देनी पड़ेगी। धर्म-विचार स्वतंत्रता का गला घोटं देता है। मैं अपनी आत्मा को किसी मत के हाथ नहीं बेचना चाहती। मुझे ऐसा ईसाई पुरुष मिलने की आशा नहीं, जिसका हृदय इतना उदार हो कि वह मेरी धार्मिक शंकाओं को दरगुज़र कर सके। मैं परिस्थिति से विवश होकर ईसा को खुदा का बेटा और अपना मुक्ति दाता नहीं मान सकती। विवश होकर गिरिजाघर में ईश्वर की प्रार्थना करने नहीं जाना चाहती।

(घ) युगों से पीड़ित दलित और अपेक्षित लोगों को कालीचरण की बातें बड़ी अच्छी लगती है। ऐसा लगता है कोई घाव पर ठंडा लेप कर रहा हो। लेकिन कालीचरन कहता है– ''मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोए हुए को जगाना चाहता हूँ सोशलिष्ट पार्टी आप की पार्टी है, गरीबों की, मजदूरों की पार्टी है। सोशलिस्ट पार्टी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं। आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए।

(ङ) गाँव के लोग बड़े सीधे दिखते है। सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासीं हो तो, वास्तव में सीधे हैं वे। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी। यह मेरा सिर्फ सात दिन का अनुभव है। संभव है पीछे चलकर मेरी धारणा गलत साबित हो।

(च) आकाश कार्तिक के आसमान की तरह धुला–धुला सा था और सितारों से यो पटा हुआ था जैसे चैत में महुएं की सुगंध से धरती पट जाती है। जनाने

इमामबड़े के आँगन में लगे हुए कदब की शाखें भी फूलों की अनगिनत गेंदे लिए मुस्करा रही थी और हवा से चुहलें कर रही थी और कच्ची उम्र की सालियों की तरह बहनोई की राह देख रही थी।

(छ) मुमकिन है कि ओंक साहब का यह ख़याल ठीक हो कि सीकरी और ताजमहल बनाने का सेहरा मुगलों के सिर नहीं बाँधा जा सकता, मैं तो यह भी मान लेता हूँ कि लाल किला भी किसी और ने बनवाया है लेकिन गाजीपुर की माँओं की कई पीढ़ियाँ जानती है कि बौरी के पुल के पास मुगलों ने मसालों के कई तूदे जरूर छोड़े हैं जो दाँत निकलने में बच्चों की मदद करते हैं।

(ज) जाति बहुत बड़ी चीज होती है। जात–पात नहीं मानने वालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिन्दू कहने से ही पिंड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण है.....? कौन ब्राह्मण! गोत्र क्या है ? मूल क्या है ? .....शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना। लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आप का पानी नहीं चल सकता।